अध्याय 11

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

लेखक/कवि: तुलसीदास

[काव्य खंड]

कक्षा	9
विषय	हिंदी
पुस्तक	NCERT 'गंगा'
पाठ का स्रोत	
आवश्यक अवधियाँ	3
प्रत्येक अवधि का समय	40 मिनट

◆ अवधारणाएँ (Concepts)

1. संवाद के माध्यम से चरित्र-चित्रण

इस पाठ में राम, लक्ष्मण और परशुराम के संवादों के माध्यम से उनके स्वभाव, गुण और व्यक्तित्व स्वतः स्पष्ट होते हैं। विद्यार्थी समझेंगे कि काव्य और नाटक में संवाद पात्रों को जीवंत बनाने का प्रमुख साधन होता है।

2. विनम्रता और अहंकार का तुलनात्मक विश्लेषण

राम का शांत एवं विनम्र स्वभाव और परशुराम का क्रोध तथा अहंकार — इन दोनों के माध्यम से विद्यार्थी सीखेंगे कि विनम्रता और संयम सदैव श्रेष्ठ होते हैं। क्रोध में लिया गया निर्णय प्रायः हानिकारक होता है।

3. काव्य तत्व: वीर रस, रौद्र रस एवं ओजपूर्ण भाषा

इस काव्यांश में वीर रस, रौद्र रस तथा विभिन्न अलंकारों का प्रयोग हुआ है। भाषा ओजस्वी, नाटकीय और प्रभावशाली है। विद्यार्थी काव्य-तत्वों (रस, अलंकार, छंद) की पहचान एवं व्याख्या कर सकेंगे।

◆ अधिगम परिणाम (Learning Outcomes)

- संवाद का भावार्थ अपने शब्दों में स्पष्ट एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे।
- राम, लक्ष्मण और परशुराम के चरित्र का तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- विनम्रता और अहंकार के बीच अंतर को उदाहरण सहित समझा सकेंगे।

- काव्य तत्वों (रस, अलंकार) की पहचान एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- कविता का शुद्ध उच्चारण एवं भावपूर्ण वाचन कर सकेंगे।
- पाठ आधारित प्रश्नों के तार्किक एवं विस्तृत उत्तर दे सकेंगे।

◆ शिक्षण-अधिगम रणनीतियाँ (Pedagogical Strategies)

प्रवेश गतिविधि: शिक्षक प्रश्न पूछेगा— "क्या क्रोध में लिया गया निर्णय सही होता है?" विद्यार्थी अपने विचार साझा करेंगे।

आदर्श वाचन: शिक्षक कविता का लय, भाव और उतार-चढ़ाव के साथ वाचन करेगा।

संवादात्मक वाचन: विद्यार्थियों को पात्रों के अनुसार संवाद पढ़ने के लिए कहा जाएगा।

भूमिका-अभिनय: विद्यार्थियों को तीन समूहों में बाँटकर राम, लक्ष्मण और परशुराम का अभिनय कराया जाएगा।

समूह चर्चा: विषय: "विनम्रता और अहंकार में कौन अधिक प्रभावशाली है और क्यों?"

◆ अन्य विषयों के साथ समेकन (Integration)

- इतिहास/संस्कृति: रामायण और भारतीय परंपरा
- नाटक/कला शिक्षा: संवादों का मंचन
- अंग्रेज़ी: संवाद का अनुवाद
- मूल्य शिक्षा: विनम्रता, धैर्य, संयम
- संस्कृत: श्लोक शैली और भाषा

◆ आकलन (Assessment)

- मौखिक आकलन: वाचन, संवाद प्रस्तुति, प्रश्नोत्तर।
- लिखित आकलन: लघु उत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, चरित्र-चित्रण।
- भूमिका-अभिनय एवं समूह चर्चा का आकलन।
- रचनात्मक लेखन: "यदि आप राम की जगह होते तो क्या करते?" विषय पर अनुच्छेद।
- कार्यपत्रक: शब्दार्थ, मिलान, रिक्त स्थान, श्लोक व्याख्या।

◆ शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM)

- NCERT पाठ्यपुस्तक (गंगा)
- श्यामपट एवं मार्कर

- रामायण से संबंधित चित्र
- ऑडियो/वीडियो (संवाद)
- कार्यपत्रक

◆ विस्तार गतिविधियाँ / जीवनोपयोगिता

- रामायण के अन्य प्रसंग पढ़ना।
- संवाद शैली में लघु नाटक लिखना।
- विनम्रता और संयम को जीवन में अपनाना।

◆ इक्कीसवीं सदी के कौशल / मूल्य शिक्षा

- संचार कौशल: संवाद बोलने की कला।
- आलोचनात्मक चिंतन: चरित्र विश्लेषण।
- रचनात्मकता: अभिनय एवं लेखन।
- मूल्य शिक्षा: विनम्रता, संयम, धैर्य।

◆ पाठोपरांत चिंतन (Post Teaching Reflection)

- क्या विद्यार्थियों ने संवाद के माध्यम से पात्रों के स्वभाव को समझा?
- क्या वे विनम्रता और अहंकार के अंतर को जीवन से जोड़ पाए?

◆ उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching)

- कठिन शब्दों एवं श्लोकों का पुनः अभ्यास कराया जाएगा।
- संवादों का सरल भाषा में पुनः अर्थ समझाया जाएगा।
- कमजोर विद्यार्थियों के लिए अलग से वाचन एवं अभ्यास कराया जाएगा।

◆ अवधि-वार शिक्षण योजना (Period-wise Planning)

- प्रथम अवधि: प्रवेश गतिविधि, वाचन, शब्दार्थ।
- द्वितीय अवधि: व्याख्या, भूमिका-अभिनय, चर्चा।
- तृतीय अवधि: पुनरावृत्ति, प्रश्नोत्तर, आकलन।